CBSE X	MT EDUCARE LTD.	Marks : 80
	SUBJECT : **HINDI COURSE - B**	
	SEMI PRELIM - II	
Date :	**MODEL ANSWER PAPER**	Time : 3 hrs.

	खण्ड : 'क'	
A.1.		
(क)	स्वामी जी को स्टेशनों पर फल दिखाई नहीं दिए, तो वे निराश हो गए । इसी निराशा में उन्होंने टिप्पणी की कि लगता है कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते । फलों के मामले में वह एक दीन देश है ।	**2**
(ख)	युवक अपनी पत्नी को रेलगाड़ी में बिठाने आया था । तब उसने स्वामी जी द्वारा फलों व जापान के संबंध में नकारात्मक टिप्पणी सुनी, तो वह उनके लिए ताज़ा फलों की टोकरी ले आया ।	**2**
(ग)	युवक ने स्वामी जी से कहा कि यदि वे उन फलों का दाम चुकाना ही चाहते हैं, तो वे इतना करें कि अपने देश में जाकर किसी से यह न कहें कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते ।	**2**
(घ)	यह गद्यांश हमें देश-प्रेम की सीख देता है । हमारे छोटे-छोटे कार्य देश के सम्मान को संसार के सामने बढ़ा और घटा सकते हैं । हमें सदैव ऐसे प्रयास करने चाहिए जिससे देश का मान ऊँचा हो ।	**2**
(ङ)	स्वामी रामतीर्थ जापान गए थे । उन दिनों उनका आहार केवल फल थे, क्योंकि उन दिनों में वे अन्न नहीं खाते थे ।	**1**
A.2.		
(क)	वैचारिक प्रगति के कारण सभ्यता डूबने जा रही है । आशय यह है कि आज संसार में विचारधाराओं और धर्मों की टक्कर के कारण पूरी मानव-जाति का संहार होने का खतरा मँडराने लगा है ।	**2**
(ख)	'मस्तिष्क जयी' होने को अर्थ है - कोमल भावनाओं की बजाय तर्क और बुद्धि से जीवन जीना । इसका दुष्परिणाम यह होता है कि तर्क से आपसी संघर्ष और अलगाव बढ़ते हैं ।	**2**
(ग)	आदर्शों से आदर्श टकरा रहे हैं, विचारों से विचार टकरा रहे हैं । इस आपसी टकराहट के कारण धरती की मिस्मत फूट रही है ।	**2**
	खण्ड : 'ख'	
A.3.		
(क)	वर्णों के मेल से बना स्वतंत्र सार्थक ध्वनि समूह 'शब्द' कहलाता है। जब वही शब्द व्याकरणिय नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तब वही शब्द पद बन जाता है।	**2**

(ख)	(i) मैंने एक बहुत लंबा व्यक्ति देखा ।	1
	(ii) अध्यापक चाहता है कि उसके शिष्य अच्छे बनें ।	1
	(iii) उसे फल खरीदने थे, इसलिए बाज़ार गया ।	1
A.4.		
(क)	(i) जन्मांध - तत्पुरुष समास	1
	(ii) प्रतिक्षण - अव्ययी भाव समास	1
(ख)	(i) नीले रंग का अंबर - कर्मधारय समास	1
	(ii) पंच है आनन जिसके - बहुब्रीहि समास	1
A.5.		
(क)	(i) सत्यवान की पत्नी सावित्री एक पतिव्रता नारी थी ।	1
	(ii) यहाँ लगभग एक दर्जन संतरे हैं ।	1
	(iii) यह शब्द लुप्त हो गया ।	1
	(iv) प्रेम करना तलवार की धार पर चलना है ।	1
(ख)	(i) बिहारीलाल ने अपने दोहों में **गागर में सागर** भर दिया है ।	1
	(ii) **जान में जान आना -** मन को चैन होना । दोपहर से आपका इंतजार हो रहा था, अब आपको देखकर जान में जान आई है ।	1
	खण्ड : 'ग'	
A.6.		
(क)	लेखक के मकान के दालान में दो रोशनदान थे उसमें कबूतर ने अपना घोसला बना लिया । एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ दिया । दूसरा अंडा बचाने की कोशिश में लेखक की माँ से टूट गया । उनकी आँखो में आँसू आ गए । इस गुनाह को मुआफ कराने के लिए लेखक की माँ ने रोजा रखा ।	2
(ख)	चाय पीने के बाद लेखक को लगा जैसे दिमाग की रफ्तार धीरे - धीरे बंद हो गई । लेखक को लगा कि मानो वह अनंतकाल में जी रहा है । यहाँ तक कि सन्नाटा भी उसे सुनाई देने लगा । दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे । केवल वर्तमान क्षण सामने था । वह अनंतकाल जितना विस्तृत था ।	2
(ग)	ओचुमेलॉव ने न्याय - प्रक्रिया की धज्जी उड़ा दी । इतना समय इस मामले पर बहस करने के बाद उन्होंने कुत्ते की प्रशंसा की और ख्यूक्रिन पर हँसकर उसका नाटक बना दिया । अत :भीड़ ख्यूक्रिन पर हँसने लगी ।	1

A.7.	सवार सीधा कर्नल के पास जा पहुँचा । कर्नल और लेफ्टिनेंट ने समझा कि यह सवार उनसे मिलकर वजीर अली को गिरफ्तार कराना चाहता है । अत: उसे मिलने की आज्ञा दे दी । सवार ने वहाँ आते ही एकांत कि मांग की क्योंकि वह एकांत में कर्नल को बेवकूफ बनाना चाहता था । पहले सवार ने पता लगाया कि ये लोग यहाँ क्यों पड़े हैं फिर उन्हें वजीर अली की गिरफ्तारी को मुश्किल बताकर उनकी हिम्मत को तोड़ा । उसने बहाना किया कि वह भी वजीर अली को गिरफ्तार करना चाहता हैं । अत: उसे कारतूस चाहिए । कर्नल खुशी - खुशी उसे दस कारतूस दे देता है । घोड़े पर सवार व्यक्ति स्वयं वजीर अली था । वह उसी व्यक्ति से कारतूस लेने में सफल हो गया, जो उसे पकड़ने आया था ।	**5**
	अथवा	
	वर्तमान समय में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत चरितार्थ होती है । आज के युग में न्याय उसे ही मिलता है जिसके पास शक्ति और धन है । 'मेरा भी एक भाई पुलिस में है ...' इस पंक्ति द्वारा यह बताने की कोशिश की गई है कि जिसकी पहुँच जितनी अधिक होती है उसे परेशानियों का सामना उतना हीं कम करना पड़ता है । एक सामान्य आदमी को अधिक परेशान किया जाता है। इस कथन द्वारा शासन प्रणाली पर कटाक्ष किया गया है ।	**5**
A.8.		
(क)	विरासत में मिली चीजों की बड़ी सँभाल इसलिए होती है क्योंकि ये बड़ी अमूल्य धरोहर होती हैं । इन चीजों को देखकर हमें अपना अतीत याद हो आता है । ये चीजें नई पीढ़ी को बहुत अधिक जानकारी देती हैं । यही कारण है कि इनकी बड़ी सँभाल की जाती है ताकि ये लंबे समय तक बनी रहे, नष्ट न हो जाएँ । इनका संबंध किसी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना से होता है ।	**2**
(ख)	इस गीत में 'सर पर कफन बाँधना' इस ओर संकेत करता है कि हमें देश पर मर-मिटने के लिए पूरी तरह तैयार हो जाना चाहिए । 'सर पर कफन बाँधना' अर्थात् मौत को गले लगाना । मौत से भयभीत होने के स्थान पर उसके लिए सहर्ष तैयार होने की ओर गीत में संकेत किया है ।	**2**
(ग)	आकाश के तारे बिना तेल के निरंतर जलते रहते हैं । उसमें कोई स्नेह तो भरता नहीं है । वे जलकर निरंतर प्रकाश देते रहते हैं ।	**1**
A.9.	हाँ, इसका कारण यह है कि प्रार्थना हमें आत्मविश्वासी बनाती है जबकि अन्य प्रार्थना गीत हमारे अंदर दासत्व की भावना का संचार करती हैं । उन गीतों में हम स्वयं को पूरी तरह आत्म - समर्पित (एलिही) कर देते हैं, लगता है हमारा कोई अस्तित्व है ही नहीं । इस प्रार्थना में हमारे अंदर निर्भयता आती हुई प्रतीत होती है । हमारे अंदर अद्‌भूत आत्मविश्वास पैदा करता है । यह प्रार्थना हमें संघर्षशील बनाती है । निश्चय ही यह प्रार्थना अन्य प्रार्थना गीतों से अलग प्रतीत होती है और अच्छी लगती है ।	**5**
	अथवा	
	कवयित्री ने हर बार दीपक को अलग ढंग से जलने के लिए कहा है । मुख्य रूप से दो ढंग हैं । मधुर-मधुर,	

	पुलक-पुलक और विहँस-विहँस खुशी को व्यक्त करते हैं । 'मधुर-मधुर' में मौन मुसकान है । 'पुलक-पुलक' हँसी की उमंग है । 'विहँस-विहँस' में उत्साह के साथ-साथ फैलाव का भी भाव है । इन तीनों में कवयित्री चाहती है कि उसकी भक्ति-भावना में प्रसन्नता बनी रहे, वह मानसिक उल्लास को बढ़ाने वाली हो, वह शेष दुनिया को भी लौ बाँटने के उत्साह से उमंगित हो । 'सिहर-सिहर' में कँपकँपी है, थरथराहट है । कवयित्री सारी दुनिया में आध्यात्मिक अँधेरा देखती है तो काँप उठती है । अत: वह निराशा और अभाव में भी अपनी आस्था को बनाए रखना चाहती है ।	5
A.10.	इफ़्फ़न को अपनी दादी से बड़ा प्यार था । प्यार तो उसे अपने अब्बू, अपनी अम्मी, अपनी बाजी और छोटी बहन नुज़हत से भी था परंतु दादी से वह जरा ज्यादा प्यार किया करता था । अम्मी तो कभी-कभार डाँट मार लिया करती थी । बाजी का भी यही हाल था । अब्बू भी कभी-कभार घर को कचहरी समझकर फैसला सुनाने लगते थे । नुज़हत को जब मौका मिलता उसकी कापियों पर तस्वीरें बनाने लगती थीं । बस एक दादी थी जिन्होंने कभी उसका दिल नहीं दुखाया । वह रात को भी उसे बहराम डाकू, अनार परी, बारह बुर्ज, गुलबकावली, हातिमताई की कहानियाँ सुनाया करती थी । इसी कारण पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से विशेष स्नेह था ।	5
	अथवा	
	टोपी को इफ़्फ़न की दादी अपनी माँ के पार्टी की दिखाई दी थी । वह जब इफ़्फ़न के घर जाता तो उसकी दादी के ही पास बैठने की कोशिश करता । दोनों अलग-अलग अधूरे थे । एक ने दूसरे को पूरा कर दिया । दोनों प्यासे थे । एक ने दूसरे की प्यास बुझा दी । टोपी को इफ़्फ़न की दादी से काफ़ी लगाव था । उसे अपनी दादी से अधिक इफ़्फ़न की दादी प्यारी थी । प्रेम का रिश्ता मजहब और जाति से परे होता है । इफ़्फ़न की दादी के देहांत पर टोपी को काफी दुख हुआ और उसने सांत्वना देते हुए कहा कि इफ़्फ़न की दादी की जगह उसकी दादी की मृत्यु हो जाती तो अच्छा होता । इस प्रकार टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे ।	5
	खण्ड : 'घ'	
A.11. (क)	**वर्षा का एक दिन** मुझे अभी तक वह दिन भली - भाँति स्मरण है जब ग्रीष्म ऋतु के प्रकोप से सारा वातावरण तप्त हो रहा था और सभी लोग आकाश की ओर निहार रहे थे कि मेघ जल बरसा दें । देखते-देखते काले बादलों ने आकाश पर अपना अधिकार जमा लिया। संभवत: इसी स्थिति को देखकर गोस्वामी तुलसीदास ने कहा होगा - ''वर्षा काल मेघ नभ छाए । गरजत लागत परम सुहाए'' आकाश में बिजली चमकने लगी और वर्षा रानी ने छम छम करके अपना नृत्य आरंभ कर दिया । वर्षा की बूँदों का स्पर्श पाकर सभी स्त्री, पुरुष, बच्चे बूढ़े उल्लासित हो उठे । वर्षा आयी जानकर पपीहे और मोर अपनी - अपनी बोलियाँ बोलने लगे । बागों में मोर नाचने लगे । तालाबों में मेढ़क टर्राने लगे । एक घंटे	

	बाद इस वर्षा ने अपना रंग दिखाना प्रारंभ कर दिया । मूसलाधार वर्षा होने लगी । घर से बाहर निकलना कठिन हो गया । ऐसा लगने लगा कि बाढ़ आयी हो । कई घरों की छतें टपकने लगी तथा कई कच्चे घर गिर पड़े । उनके लिए वर्षा दुखदायी हो गयी । वैसे सामान्यत: लोग इससे प्रसन्न थे ।	**5**
(ख)	**आत्मनिर्भरता :** ''आत्मनिर्भरता'' का अर्थ है - अपना सहारा आप बनना । यह एक श्रेष्ठ गुण है जो साधना और परिश्रम से विकसित होता है । आत्मविश्वास इसका मूल आधार है । आत्मनिर्भरता का गुण मानव का एकमात्र सच्चा मित्र है । जिस देश के नागरिको में आत्मनिर्भरता का गुण आ जाता है वह प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति करने में समर्थ हो जाता है । ऐसे व्यक्ति के बारे में ही हरिऔधजी ने कहा है - ''पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे, सैकड़ो मरुभूमि में नदियाँ बहा देतें हैं वे,'' । इतिहास साक्षी है कि आत्मनिर्भरता के कारण ही शिवाजी, महाराणा प्रताप, महात्मा गांधी, नेपोलियन ने प्रसिद्धि प्राप्त की । आत्मनिर्भरता ही जीवन में उन्नति का साधन है । इससे व्यक्ति में आत्मबल का संचार होता है । उसमें पुरुषार्थ, नैतिकता एवं उत्साह की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहती है ।	**5**
(ग)	**पराधीनता :** स्वतंत्रता या स्वाधीनता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है । मनुष्य ही क्यों, सृष्टि के प्रत्येक प्राणी को स्वाधीन रहने का अधिकार है । स्वतंत्रता के अभाव में मानव अपना सर्वांगीण विकास नहीं कर सकता । पराधीनता में तो उसके लिए स्वर्ग - नरक में अंतर करना कठिन है । उसके लिए स्वर्ग और नरक में कोई अंतर नहीं । वियोगी हरि के शब्दो में - ''पराधीन जे नर नहीं, स्वर्ग - नरक ता हेतू । पराधीन जे नर, नहीं स्वर्ग - नरक ता हेतू ।'' पराधीन व्यक्ति का अपना किसी प्रकार का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता । उसमें अनेक प्रकार की क्षमताएँ हो सकती हैं किंतु परतंत्र होने के कारण उसे अवसर ही नहीं मिल पाता । वह सदा दूसरों की अनुकंपा पर ही अपना जीवन निर्वाह करता है । उसका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है । पराधीनता में मनुष्य को परसंचालित मशीन की तरह कार्य करना पड़ता है ।	**5**
A.12.		
(क)	सेवा में, पोस्टमास्टर महोदय, मुख्य डाकघर, रमेश नगर, नई दिल्ली । **विषय** – मनीऑर्डर न प्राप्त होने के संदर्भ में शिकायत पत्र ।	

मान्यवर,

निवेदन है कि मैं आपके डाकघर से दिनांक 2 मार्च 2017 को अपने ग्राम बनचारी (जिला फरीदाबाद) हरियाणा को 3000 रु. का मनीआर्डर कराया था । रसीद क्रमांक था डी - 270241।

इस मनीआर्डर को कराए हुए एक मास बीत गया है, पर यह अभी तक वहाँ नहीं पहुँचा हैं । वहाँ मेरे परिवारजनों को रुपयों की बहुत आवश्यकता है ।

आपके प्रार्थना है कि मनीआर्डर न पहुँचने का कारण पता लगाकर उसे शीघ्र गंतव्य तक पहुँचाने की कृपा करें ।

सधन्यवाद ।

भवदीय,

रामप्रसाद वर्मा

ए - 50, रमेश नगर, नई दिल्ली ।

दिनांक **5**

अथवा

सेवा में,

सहायक निगमायुक्त (पश्चिमी क्षेत्र)

दिल्ली नगर निगम,

राजा गार्डन नई दिल्ली ।

विषय – पार्क का विकास ।

महोदय,

हम रघुवीर नगर के निवासी, आपका ध्यान इस क्षेत्र में पार्क के अभाव की ओर आकर्षित करना चाहते हैं । पच्चीस गज प्लाटवाले मकानों के क्षेत्र में कोई भी पार्क नहीं हैं । यद्यपि बीच में काफी स्थान खाली पड़ा है । इस क्षेत्र के नागरिकों को व्यायाम करने के लिए तथा बच्चो को खेलने के लिए एक पार्क की अत्यंत आवश्यकता है । इस और पहले भी कई बार ध्यान आकर्षित किया गया, पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गई है ।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि यहाँ शीघ्र ही एक पार्क का विकास करवाएँ । स्थानीय जनता इसमें भरपूर सहयोग देगी । आपकी इस कृपा के लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे ।

धन्यवाद ।

भवदीय,

हरीश रावत

रघुवीर नगर सुधार सभा

दिनांक **5**

A.13.

माडर्न स्कूल,
दिल्ली

सूचना

विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए सर्दियों की छुट्टियों में 26-27 दिसंबर को दिल्ली-भ्रमण का आयोजन किया जा रहा है । इसमें दिल्ली के सभी ऐतिहासिक और प्रसिद्ध स्थलों का भ्रमण कराया जाएगा । जो विद्यार्थी जाने के इच्छुक हैं वे अपने कक्षा-अध्यापक से संपर्क करें तथा 20 दिसंबर तक अपने नाम और राशि जमा करवा दें ।

दिनांक : 18.12.2017

प्राचार्य
(हस्ताक्षर) **5**

अथवा

विवेकानंद वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
फैजाबाद
नाटक परिषद

सूचना

हमारे विद्यालय में 15 नवंबर, 2017 को शाम 6 बजे दिल्ली की प्रसिद्ध नाटक-मंडली श्रीराम थियेटर की ओर से 'भगतसिंह' नाटक का आयोजन होने जा रहा है । यह नाटक देश के सभी बड़े मंचों पर खेला जा चुका है । सभी विद्यार्थी इसे देखने के लिए निशुल्क आमंत्रित हैं । नाटक को देखने के लिए नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति भी पधारेंगे । अत: विद्यार्थी समय पर पहुँचे तथा अंत तक अनुशासन का परिचय दें ।

दिनांक : 18.10.2017

प्राचार्य
(हस्ताक्षर) **5**

A.14.

विजय – हलो सुरेखा! कैसी हो?
सुरेखा – ठीक हूँ! तू सुना ।
विजय – ठीक हूँ! आजकल एन.डी.ए. की तैयारी में लगा हूँ ।
सुरेखा – आखिर तू बनेगा फौज़ी ही ।
विजय – क्यों, क्या तुझे फौज़ी पसंद नहीं हैं ?
सुरेखा – नहीं रे। फौज़ियों से डर लगता है । लगता है, ये परदेशी हैं ।

	विजय –	और क्या ? हम दीवानों की क्या हस्ती है, आज यहाँ कल वहाँ चले मस्ती का आलम साथ चले, हम धूल उड़ाते जहाँ चले।	
	सुरेखा –	यही तो बीमारी है फौज़ियों में । जब भी देखो, अपने में मस्त रहते हैं और चलने-जाने की बातें करते हैं । मुझे डर है–अभी तू कहेगा–अच्छा चल रहा हूँ ।	
	विजय –	अरे नहीं। अच्छा तू बता, तू क्या तैयारी कर रही है?	
	सुरेखा –	मुझे क्या बनना है? मेडीकल की तैयारी कर रही हूँ ।	
	विजय –	तो डॉक्टर साहिबा बनेंगी । सच बताऊँ। मुझे डॉक्टरों से डर लगता है । लेडी डॉक्टर तो बिल्कुल नहीं भाती । कैसी तनी-तनी रहती हैं । लड़कियाँ और औरतें तो ऐसे ही अच्छी लगती हैं । उनका गंभीर रहना मुझे बिलकुल पसंद नहीं है ।	
	सुरेखा –	ये सब तुम्हारे ढोंग हैं। अगर लड़कों को लेडी डॉक्टर पसंद न आती तो न सचिन तेंदुलकर लेडी डॉक्टर से शादी करता, न वीरेंद्र सहवाग ।	
	विजय –	मुझे तो सचमुच इन दोनों पर दया आती है! दोनों आजकल रन नहीं बना रहे और बार-बार अस्पताल में इलाज़ करवाते फिर रहे हैं ।	
	सुरेखा –	तो आए तो डॉक्टर के ही पास न!	**5**
		अथवा	
	गणेश –	हलो सूरज! कैसे हो!	
	सूरज –	ठीक हूँ भाई! आज का मैच देखा! आज युवराज ने कमाल का शतक जमा दिया ।	
	गणेश –	और परसों, जो रैना ने 78 रन बनाए थे! उसने तो हारता हुआ मैच लपक लिया ।	
	सूरज –	भाई मानना पड़ेगा, अब भारतीय टीम में ऐसे-ऐसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी आ गए हैं कि पता नहीं चलता, कौन कब अपना जलवा दिखा दे ।	
	गणेश –	पिछले कई मैचों से महेंद्र सिंह धोनी छाया हुआ है । उसने तो पाकिस्तान के बालरों को सचमुच धोकर रख दिया था ।	
	सूरज –	गणेश। पहले तो हम सचिन, द्रविड़, सहवाग की ओर निहारतें रहते थे । अब यह स्थिति आ चुकी है कि ये तीनों भी नए खिलाड़ियों के सामने फीके पड़ने लगे हैं ।	
	गणेश –	मैं इसके लिए टीम के कोच ग्रेग चैपल को बधाई देना चाहूँगा जिसने सौरव गांगुली जैसे महान खिलाड़ी को बाहर करके एक जोखिम लिया था। परंतु वह जोखिम ठीक साबित हुआ ।	
	सूरज –	और क्या! कोई खिलाड़ी पुराना होने के कारण टीम में नहीं लिया जाना चाहिए! हमेशा उसके वर्तमान खेल को देखा जाना चाहिए ।	
	गणेश –	अब लगता है, सचिन के बाहर जाने की बारी है ।	
	सूरज –	यार! अब उसका शरीर साथ नहीं दे रहा । जब से उसका ऑपरेशन हुआ है, उसका आत्मविश्वास डगमगा गया है ।	

गणेश – तभी तो कह रहा हूँ, अब उसके बाहर होने की बारी है!
सूरज – मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वह उसे शक्ति दे!
गणेश – और मैं चाहता हूँ कि भारत में नए-से-नए क्रिकेट-सितारे उभरें । **5**

A.15.

स्वर्णिम भविष्य की दस्तक!
सरस्वती विद्यालय
जी.टी. रोड, अंबाला
केवल कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों के लिए

- व्यक्तित्व विकास की सभी आधुनिक सुविधाएँ!
- आधुनिक प्रयोगशालाएँ!
- इंडोर तथा आउटडोर खेलों का प्रबंध!
- संगीत, नृत्य, संभाषण हर छात्र के लिए आवश्यक!
- राष्ट्रीय प्रतिभाओं के साथ संपर्क को प्रोत्याहन!

अवसर मत चूकिए!
केवल 100-100 सीटें!
प्रवेश साक्षात्कार और 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर!

निदेशक
मोहन पवार
संपर्क : 9892345679 **5**

अथवा

खुल गया! **खुशखबरी!** **खुल गया!**

टाइगर जूते
खरीदने के लिए अब आपको दिल्ली नहीं जाना पड़ेगा ।
पधारिए
किला बाज़ार गाजियाबाद की दुकान न. 134 पर और खरीदिए अपने मनपसंद
टाइगर जूते, टाइगर चप्पलें
टाइगर सैंडल, टाइगर स्पोर्ट्स शूज़
तथा बच्चों के मनभावन सजीले जूते!

दुकान प्रातः 9 से शाम 8 बजे तक खुली रहती है ।
संपर्क : 08456789210 **5**

❖❖❖❖